1. **सोनी, वेद प्रकाश**

मथुरा - दिल्लीः नवयुग, २००८.

१६२पृ

H 306.694535054 सोनीवे-म 61823

श्रद्धालु और आस्थावान जनों के लिए मथुरा तथा बृजक्षेत्र एक अलौलिक स्थान हैं । भगवान कृष्ण की जन्मभूमि, बाल-लीलाओं की भूमि होने के कारण इस क्षेत्र का आध्यात्मिक महत्व है । कुषाणों के शासन में मथुरा एक प्रमुख कला केन्द्र होने के कारण मथुरा का सांस्कृतिक महत्व भी कम नहीं । प्राचीन समय मथुरा सार्थवाह मार्ग एवं नदी के नौवहन मार्ग पर अवस्थित होने के कारण राजनैतिक महता से युक्त था । यही कारण है कि मध्य देश में राजनैतिक सत्ता की स्थिरता का एक केन्द्र मथुरा बना । भारत की सात मोक्षदायिनी पुरियों में एक मथुरा, धार्मिकता, ऐतिहासिकता, पावनता, कला एवं विद्या का मध्य बिन्दु रहा । कहावत भी है - 'मथुरा तीन लोग से न्यारी ।'

2. **सोनी, वेद प्रकाश**

काशी-वाराणसी - दिल्लीः नवयुग, २००८.

१६६पृ

H 306.694535054 सोनीवे-का 61827

विश्व के गिनेचुने प्राचीन नगरों में से एक काशी-वाराणसी ३००० वर्ष पुराना नगर है । भारत के हिन्दु समाज के मन की निष्ठा में काशी-वाराणसी का नाम तीर्थाटन के समय प्रमुखता से रहता है । प्रयाग-काशी-गया इस त्रिस्थली की यात्रा से तीर्थाटन सफल होता था-यह मान्यता समाज में अब भी है । पौराणिक आख्यान के अनुसार काशी भगवान शिव की नगरी है । यहां उत्तरवाहिनी गंगा अपनी मनोहरता के लिए जग प्रसिद्ध है। गंगा पर बने घाट और सैकड़ों मंदिर जन-जन को मोहते हैं । भारत की सात मोक्षदायिनी पुरियों में काशी-वाराणसी भी है । हजारों वर्षों से यहां मोक्ष की कामना से लोग काशी वास करते आ रहे है। राजनीति, व्यापार, विद्या, वस्तु तथा मूर्ति-शिल्प का स्थल होने के कारण वाराणसी भारत का प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र हैं ।

3. **सिंह, जसदेव**

मैं जसदेव सिंह बोल रहा हूँ - नई दिल्लीः किताबघर, २००६.

३०७पृ

H 927.96358 सिंहज-मैं 61807

वचिक परंपरा की अपनी एक अलग दुनिया होती है । उसके अपने अंदाज होते हैं । जसदेव सिंह इस दुनिया का बेहद जाना-पहचाना और प्रख्यात नाम हैं । खेल-कमेंटेटर के रूप में उनकी प्रवाहमय भाषा को अब तक हम रेडियो या टेलीविजन के माध्यम से सुनते आए हैं, उनकी वही प्रवाहमय और गतिशील भाषा मैं उनकी आत्मकथात्मक पुस्तक में उद्दृत है। वे लिखित परंपरा में भी अपना वही अंदाज लेकर उपस्थित हैं । कहीं कोई उलझाव नहीं। कोई कहीं गतिरोध नहीं । उनकी आत्मकथा पढ़ने पर यह जानकारी मिलती है कि वे अपने इरादों और लक्ष्य को लेकर कितने लगनशील और दृढ़ रहे हैं और इसके लिए उन्होंने कितनी लंबी यात्रा तय की है । उन्हें हिंदी नहीं आती थी, पर उन्होंने बचपन में तय कर लिया था कि वे हिंदी कमेंटेटर बनेंगे.... यह उन्होंने कर दिखाया । उनकी भाषा मात्र भाषा नहीं, वह हिंदी-उर्दू-पंजाबी मिश्रित सहज सांस्कृतिक भाषा है । उन्होंने एक लंबी यात्रा तय की है । इसमें उन्होंने न जाने कितने बाह्य और अंतसंघर्षों का सामना किया है । इन संघर्षों का उन्होंने बड़ी बेबाकी, ईमानदारी और साहस के साथ पेश किया है । वे कहीं कोई दुराव-छिपाव नहीं रखते । जिस सच को जैसा भोगा है, जैसा महसूस किया है उसे बिना किसी हेरफेर के उन्होंने प्रस्तुत कर दिया है । उनकी यह आत्मकथा अपने आप में विशेष ढंग और ढब की अकेली पुस्तक है । इससे हिंदी का अनुभव-फलक अन्य तमाम खूबियों के साथ विस्तृत हुआ है ।

4. सिन्हा, तारा (सं.)

राजेंद्र बाबूः पत्रों के आईने में - नई दिल्लीः प्रभात, २००७. (भाग १/भाग २)

२६४पृ/२७२पृ

H 923.154 प्रसाद-रा 61840/61843

किसी भी महान् व्यक्ति के पत्र उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानने के सशक्त एवं मोहक माध्यम होते हैं । आम जीवन की बहुत सी बातें, जो पेशेवर इतिहासकारों द्वारा नजरअंदाज कर दी जाती हैं, पत्रों में स्थान पाकर उस युग, समाज और पीढ़ी के विषय में बहुमूल्य जानकारियाँ उपलब्ध कराती हैं । राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी नेता एवं भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के पत्रों का इसी दृष्टि से विशेष महत्व हैं । सन् १९०५ से १९६३ तक की वह अवधि, जिसके बीच लिखे गए पत्रों को कालक्रमानुसार इस संग्रह के दो खंडों में प्रस्तुत किया गया है, राजेन्द्र बाबू के घटनापूर्ण जीवन एवं देश के इतिहास का एक महत्वपूर्ण युग था । स्वाभाविक है कि ये पत्र न केवल उस युग-पुरुष के लब्धप्रतिष्ठ जीवन के छह दशकों की रोचक कहानी कहते हैं, बल्कि इनमें उस पूरे उथल-पुथल भरे युग का व्यापक व विशद चित्र उभरकर सामने आता है । यही नहीं, इन पत्रों द्वारा राजेन्द्र बाबू के जीवन एवं उस काल की कई घटनाओं पर नया प्रकाश पड़ता है और उनके विराट् व्यक्तित्व के अनेक अनजाने पहलू उजागर होते हैं ।

5. आयंगार, बी.के.एस.

सभी के लिए योग - नई दिल्लीः प्रभात, २००८.

३४२पृ

H 613.7046 आयंगा-स 61845

योग-साधना के विश्वविख्यात उपासक एवं योगाचार्य बी.के.एस. आयंगार द्वारा योग विषय पर हिंदी में प्रकाशित पहली पुस्तक । यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि योग जैसे विस्तृत विषय पर लिखित यह पुस्तक परंपराओं से हटकर है । इसमें योगासनों के विशुद्ध रूप, उनका शुद्धाचरण, उनकी बारीकियाँ, शरीर की कमियाँ और रोग-व्याधियों के अनुसार योगासनों का चयन आदि के संबंध में सविस्तार मार्गदर्शन सहज, सरल एवं बोधगम्य रूप में किया गया है । योग और योगासनों का सूक्ष्म विश्लेषण, जो हर आयु-वर्ग के पाठकों हेतु उपयोगी है । अधिक विस्तृत व उपयोगी जानकारियाँ, जिन्हें पढकर पाठकगण आसानी से योग, योगासन व प्रणायाम सीख सकते हैं । विशिष्ट संप्रेषण शैली एवं शरीर विज्ञान संबंधी वैज्ञानिक विश्लेषण पुस्तक की अतिरिक्त विशेषता है । योगासनों की विभिन्न स्थितियों को दरशाते लगभग ३०० रेखाचित्र, ताकि विषय को समझने में आसानी रहे । आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान आदि अंगो के सर्वांगीण विवेचन से परिपूर्ण पुस्तक ।

6. **सान्याल, शचीन्द्रनाथ**

बन्दी जीवन - दिल्लीः आत्माराम, २००९.

४१५पृ

H 923.254 सान्याल-ब 61748

'बंदी जीवन' हमारे इस क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास का वह भाग है, जिसमें उन रहस्यात्मक रोमांचकारी घटनाओं का अत्यन्त सजीव और प्रमाणिक विवरण है, जिनके कारण एक दिन भारत के विदेशी शासकों की नींद हराम हो गई थी । 'बंदी जीवन' के लेखक श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल ने स्वयं इन घटनाओं में प्रमुख भाग लिया था । वीरश्रेष्ठ रासबिहारी बोस के दाहिने हाथ के रूप में इस क्रांति संघर्ष के संचालन का उत्तरदायित्वपूर्ण भार उन पर था, जिसे उन्होंने बड़ी गम्भीरता और जिम्मेदारी के साथ निबाहा था, तथा इसके लिए कालान्तर में बडी भीषण यातनाएँ शचीन्द्र बाबू को सहन करनी पडी थी । यही कारण है कि क्रांतिकारी आंदोलन का यह घटनाक्रम उन्होंने ऐसी मर्मस्पर्शी भाषा में लिखा है कि अनेक वर्षों तक क्रांतिकारी संगठन द्वारा युवकों को अपने मार्ग में दीक्षित करने के लिए इस ग्रंथ का उपयोग किया जाता रहा है । 'बंदी जीवन' के प्रस्तुत संस्कृरण में पूर्व प्रकाशित दो भागों के अतिरिक्त वह तीसरा भाग भी है, जो अभी तक पुस्तक रूप में प्रकाशित नहीं हो सका था । इसके साथ ही 'कुछ पूरक तथ्य' शीर्षक से एक पृथक अध्याय भी है जिसमें ग्रंथ में वर्णित घटनाओं का वह व्यौरा दिया गया है जो अंग्रेजों के शासनकाल में नहीं दिया जा सकता था ।

7. **दर्शक, हंसराज**

भारत देशाटन - दिल्लीः नवयुग, २००८.

१९२पृ

H 915.404 हंसरा-भा 61829

भारत में पर्यटकों के लिए अनेकानेक आकर्षण हैं । इनमें यदि एक ओर हिमालय की वादियाँ, कन्याकुमारी का विवेकानन्द शिला-स्मारक, केरल के बैकवाटर्स, सह्याद्रि-नीलगिरि के हरे अंचल, विंध्याचल के प्रपात, अरावली की झीलें, देशभर में फैले मनभाते हिलस्टेशन, पूर्वोत्तरी महाछोर, दर्शनीय नगर-महानगर और चारधाम-सप्तपुरी का तीर्थाटन देश प्रसिद्ध आकर्षण है तो दूसरी ओर आगरा का ताजमहल, गोवा के बीच, कार्बेट पार्क का वन्यजीवन, स्कीइंग क्रीड़ास्थल, अजन्ता-एलोरा की गुफाएं, कोणार्क का भव्य सूर्य मंदिर, बौद्ध तीर्थसमूह, खजुराहो, दिल्ली का लोटस टेम्पल, उत्तरांचल की विश्वप्रसिद्ध फूलों की घाटी व अउली (ओली) का नया स्कीइंग क्रीड़ास्थल जैसे भी कुछ विश्वप्रसिद्ध आकर्षण हैं जो हजरों-लाखों देशी विदेशी पर्यटकों को हर वर्ष यहां आने का मौन निमंत्रण देते हैं । बस, इन्हीं देशव्यापी यात्राओं पर आधारित पर्यटन वर्ष १९९१ में प्रकाशित इस पुस्तक का यह दूसरा संस्करण भी पाठकों के मनोरंजन के साथ साथ उन्हें देशाटन के लिए भी प्रेरित करेगा ।

8. **पांचाल, परमानन्द**

अमीर खुसरोः व्यक्तित्व और कृतित्व - नई दिल्लीः हिन्दी बुक, २००७

१५६पृ

H 928.91431 पांचाल-अ 61802

अमीर खुसरो भारत की एक महान विभूति थे । उनका व्यक्तित्व बहु आयामी था । एक सूफी होने के साथ-साथ, वे उच्चकोटि के संगीतज्ञ, बहुभाषाविद्, फारसी के अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति के कवि और इससे भी बढकर सच्चे देश भक्त थे, जिसने दीन और दुनिया दोनों को अपनी मुट्ठी में कर लिया था । उन्हें अपने भारतीय होने पर गर्व था । वे देश-प्रेम को धर्म का ही अंश मानते थे । हिन्दू मुस्लिम मेलजोल से भारत में एक समन्वित संस्कृति का बीजारोपण खुसरो ने ही किया । अमीर खुसरो ने जहां भारतीय संगीत में कई रागों और वाद्य यन्त्रों का आविष्कार किया, वहीं उन्होंने अपनी मातृभाषा हिन्दी में भी काव्य रचना की और खडी बोली हिन्दी के प्रथम कवि होने का गौरव प्राप्त किया, जिसकी पुख्ता नींव पर हिन्दी और उर्दू दोनों खडी हैं और उसी का परिनिष्ठित रूप आज इस देश की राजभाषा है। प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने अमीर खुसरो के जीवन का अनुसंन्धान पूर्वक प्रामाणिक परिचय प्रस्तुत करते हुए हिन्दी में उपलब्ध उनकी रचनाओं और खालिक बारी के विवेचनात्मक अध्ययन के साथ-साथ उनकी फारसी की कुछ चुनींदा गजलों को भी सम्मिलित किया है ताकि हिन्दी पाठक उनके फारसी काव्य का भी रसास्वादन कर सकें । अमीर खुसरो के सम्बन्ध में हिन्दी में लिखी गई अपने प्रकार की यह पहली सम्पूर्ण पुस्तक है, जिसमें खुसरो की हिन्दी रचनाओं के सम्बन्ध में अनेक अनुत्तरित प्रश्नों पर तर्कपूर्ण विचार किया गया है।

9. **पुरोहित, किशनलाल**

भारत की महान विभूतियाँ - दिल्लीः कीन बुक्स, २००७.

१३६पृ

H 920.054 पुरोहि-भा 61806

जिस प्रकार किसी परिवार की सुख-समृद्धि में उस परिवार के सदस्यों का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान होता है उसी प्रकार एक विशाल राष्ट्र के चहुंमुखी विकास तथा उसके कार्यों का सम्पादन करने में उसके नागरिकों का योगदान होता है । किंतु कुछ प्रतिभाएं किसी विशेष क्षेत्र में औरों से बढ़-चढ़कर होती हैं और एक उदाहरण बन जाती हैं, उन्हें हम महान विभूतियां कहते हैं । इस पुस्तक में ऐसी ही ५१ विभूतियां का जीवन परिचय तथा उनके कार्य और उन कार्यों के फलस्वरूप उन्हें मिले सम्मान आदि का संक्षिप्त विवरण रोचक शैली में दिया गया है । मूल्य एवं पृष्ठ सीमा को देखते हमारा यह प्रयत्न रहा है कि हरेक क्षेत्र के श्रेष्ठ व्यक्तियों को ही संकलित किया जाये ताकि आर्थिक दृष्टि से पुस्तक हर पाठक या संस्था की पहुंच में रहे । इस पुस्तक द्वारा पाठक अपने देश के महान व्यक्तियों चाहे वे राजनीतिज्ञ, क्रांतिकारी, वैज्ञानिक, समाज-सुधारक, लेखक, उद्योग पति हों और चाहे गीतकार, संगीतकार, गायक और खिलाड़ी आदि हों- के बारे में जानकारी प्राप्त कर उनसे प्रेरणा ले सकेगा ।

10. प्रसाद, राजेंद्र

आत्मकथा - नई दिल्लीः सस्ता, २००७.

६०४पृ

H 923.154 प्रसाद-आ 61918

श्री राजेन्द्रबाबू को देखते ही उनकी सरलता और नम्रता की जो छाप हमारे दिल पर पड़ती है, उसका प्रतिबिंब इस आत्मकथा के पन्ने-पन्ने में पाया जाता है । प्रायः पिछले पच्चीस वर्षों से हमारा देश किस स्थिति को पहुंच गया है, इसका सजीव और एक पवित्र देश-भक्त के हृदय के रंग में रंगा हुआ इतिहास पाठकों को इस आत्मकथा में मिलेगा । सन् १९१७ में चंपारण की लड़ाई के समय उन्होंने गांधीजी के कदमों पर चलकर फकीरी धारण की । उसके बाद की उनकी आत्मकथा हमारे देश के पिछले तीस वर्षों के सार्वजनिक जीवन का इतिहास बन जाती है ।

11. प्रसाद, जयशंकर

कामायनी - नई दिल्लीः मानसी, २००८.

१२८पृ

H 891.431032 प्रसाद-का 61816

कामायनी हिंदी साहित्य की कुछ कालजयी कृतियों की सूची बनाई जाए तो उसमें जयशंकर प्रसाद की कृति 'कामायनी' जरूर होगी, लेकिन बीसवीं सदी के चौथे दशक से लेकर आज तक इसकी प्रासंगिकता को लेकर लगातार विवाद जारी है । मुक्तिबोध ने भी इस पर किताब लिखी थी 'कामायनीः एक पुनर्विचार' । डॉ. नगेन्द्र से लेकर प्रभाकर श्रोत्रिय तक सैकड़ों विचारक 'कामायनी' के विभिन्न पक्षों पर विचार-विमार्श कर चुके हैं । समकालीन जीवन के विभिन्न उतार-चढाव 'कामायनी' में नहीं है, ऐसा आरोप लगता रहा है, लेकिन 'कामायनी' की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है । लिखे जाने के तुरन्त बाद ही इसे हिंदी की महत्वपूर्ण कृति का दर्जा हासिल हो गया था । 'कामायनी' छायावद की प्रतिनिधि रचना तो है ही, अपने आकार में लघु होने के बावजूद इसे 'महाकाव्य' का दर्जा भी हासिल है । इससे भी 'कामायनी' का महत्व स्वयंसिद्ध है लेकिन अपने समय से कटे होने का इस पर लगा आरोप उचित नही है । बडी और महान कृतियों को परखने के मामले में प्रचलित काव्य प्रतिमान अक्सर असफल सिद्ध होते हैं ।

12. **प्रसाद, जयशंकर**

कंकाल - नई दिल्लीः मानसी, २००८.

१७६पृ

H 891.433 प्रसाद-कं 61818

कंकाल महाकवि जयशंकर प्रसाद ने कहानी और नाटक के क्षेत्र में ही नहीं, उपन्यास के क्षेत्र में भी युगांतकारी पहल की । जासूसी और अय्यारी प्रधान उपन्यासों के उस युग में इन्होंने विचारप्रधान उपन्यासों की आधारशिला रखी । इनका उपन्यास 'कंकाल' (१९१९) हिंदी का पहला विचारप्रधान उपन्यास माना जाता है, जो हमें तत्कालीन समाज और जीवन के उस वृत्त में ले जाता है, जिमसें हरिद्वार, वृंदावन और काशी जैसे नगरों के धार्मिक स्थानों में चल रहे पाखंड और वहां पनप रहे पाप को अनावृत्त किया गया है । विधवा और विवश स्त्रियों की दारुण जिंदगी का प्रमाणिक और विश्वसनीय चित्रण 'कंकाल' को ट्रेंड सेंटर उपन्यास सिद्ध करता है, जिसका विकसित रूप प्रेमचंद के 'गोदान' में दिखता है । 'कंकाल' में व्यक्तिगत संबंधों के बीच स्वार्थ, धोखाधड़ी और विश्वासघात होते देख पाठक हक्का-बक्का रह जाता है, लेकिन सामंती समाज में मानवीय संबंधों के बीच स्त्री का त्याग और उसकी सहनशीलता पाठक को आश्वस्त करती है कि ऐसे लोगों के कारण धरती फिर भी जीने योग्य बनी रहेगी । इस रूप में 'कंकाल' भारत के पुनर्जागरण काल की सुधारोन्मुख चेतना का प्रतिनिधि उपन्यास सिद्ध होता है, जिसे पढे बिना हम हिंदी उपन्यास के सामाजिक अवधान को समझ नहीं सकेंगे और ना ही समझ सकेंगे जयशंकर प्रसाद के उस सर्जक व्यक्तित्व को, जो इतिहास के जरिये-नजरिये से समझने-समझाने में लगा रहा, जीवन पर्यंत।

13. **चट्टोपाध्याय, शरत्चन्द्र**

कमला - रोहतकः हिमानी, २००८.

१७८पृ

H 891.433 चट्टोपा-क 61819

यह कहते-कहते कमला की आँखों से और भी ज़ोर से आंसू गिरने लगे । किन्तु अबकी कमला ने उन आँसुओं की पोंछने की कुछ भी चेष्टा नहीं की, वह उसी सिलसिले में हाथ जोड़कर कहने लगी-मेरे कारण तुम दोनों जनों ने कितना दुःख और कष्ट उठाया है, यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ और भगवान भी जानते हैं । किन्तु अब मै। एक दिन भी रुकना या देर करना नहीं चाहती । आज से मैंने अपने दुर्भाग्य का सारा भार अपने सिर लाद लिया.. .... इसी उपन्यास से ।

14. **प्रेमचंद**

मानसरोवर - नई दिल्लीः ज्ञानदीप, २००८. (भाग १-८)

२४८पृ

H 891.433 प्रेमच-मा 61793/61800

प्रेमचन्द आधुनिक हिंदी कहानी के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले लेखकों में से हैं । उपन्यासों की तरह उनकी कहानियां भी ऐतिहासिक महत्व रखती हैं । अपनी तीन सौ से अधिक कहानियों में प्रेमचन्द ने तरह-तरह के प्रयोग किए हैं । एक तरफ 'पंच परमेश्वर' जैसी आदर्शवादी कहानी है तो दूसरी तरफ 'कफन', 'पूस की रात' और 'ठाकुर का कुआं' जैसी यथार्थवादी कहानियां, जिनमें जीवन का कठोर यथार्थ देखा जा सकता है । बड़े घर की बेटी, सद्‌गति, सवा सेर गेहूं तथा जेल जैसी कहानियां पाठक के भावजगत को समृद्ध करती हैं । बाल मनोविज्ञान पर केंद्रित 'ईदगाह' जैसी कहानी लिखने वाले प्रेमचन्द 'बडे भाई साहब' जैसी कहानी एक भावभूमि पर लिखते हैं तो 'दो बैलों की कथा' की रचना एक दूसरे ही धरातल पर जाकर करते हैं । 'आत्माराम', 'मोटेसम शास्त्री' और 'नशा' प्रेमचन्द के कथाकार का एक रूप प्रस्तुत करती हैं ।

15. **धमला, जीवनाथ**

लोकतान्त्रिक आन्दोलनका शीर्ष-सेनानी : गिरिजाप्रसाद कोइराला संकल्प र नेतृत्व -

काठमाण्डौंः पुण्यमाता, २०६६.

१६४पृ

N 923.25496 धमला-लो 62073

संकल्प र नेतृत्व गिरिजाप्रसाद कोइरालाका संदर्भमा व्यक्त गरिने अत्यन्त सुहाउंदा शब्दहरू हुन, विशेषणहरू हुन्। नेपाली राजनीतिका मूर्धन्य वक्तित्व गिरिजाबाबु दृढ निश्चयी र दृढ संकल्पवाला व्यक्तिका रूपमा दशकौंदेखि स्थापित छन् । अठोट र संकल्पपछि त्यसको सही र प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि अनिवार्य शर्त कुशल नेतृत्व हो जसका पर्याय पनि गिरिजाबाबु नै हुन् । उदाहरण एउटै मात्र छैन-थुप्रै छन्, घटना एउटै मात्र छैन-धेरै छन्, परिणाम एउटै मात्र छैन-अनगिन्ती र अत्यन्त महत्वका छन् । चाहे राणा शासन पल्टाउने संकल्प होस् वा त्यसलाई पल्टाएको उदाहरण होस्, चाहे सत्र सालले ल्याएको पंचायती कालरात्रि हटाउने संकल्प होस, र यो अंध्यारो हटाएको उदाहरण होस, चाहे छयालीस सालको आन्दोलन र आसपासका कठिन दिनहरू हुनू, चाहे दसवर्षे द्वन्द्वका कहालीलाग्दा क्षणहरू हुन् वा चाहे शाहीकालका डरलाग्दा दिनहरू हुनू, प्रायः सबै कालखण्डमा दृढ संकल्पका साथ नेतृत्वदायी भूमिकामा गिरिजाप्रसाद कोइराला नै थिए र यद्यपि छन् ।

16. शमशेर, हिमालय

सम्झना र चिन्तन - काठमाण्डौं: हिमालय शमशेर, २०६६.

१७६पृ

N 923.35496 शमशे-स 62077

'सम्झना र चिन्तन' हिमालय शमशेर राणा एक पठनीय पुस्तक हो । लेखक बौद्धिक चिन्तन गर्ने अर्थविद् मात्र यस पुस्तकमा देखिएका छैनन् राष्ट्रिय जीवनका विभिन्न पक्षबारे आफ्नो स्पष्ट दृष्टिकोण राख्ने तथा देशका सामाजिक, आर्थिक र राजनीतिक क्षेत्रमा समेत योगदान गर्न सक्रिय जीवन बाँचेका व्यक्तिका रुपमा स्थापित भएका देखिन्छन् । जन्म र बाल्यकालका कुराहरू रोचक प्रकारले प्रस्तुत गरेका छन् । पुस्तकले लेखकको व्यक्तिगत जीवनको चिनारी मात्र दिंदैन, नेपाली इतिहासको महत्वपूर्ण कालखण्डको पनि दिग्दर्शन भएको छ । लेखक ले संविधान र देशसम्बन्धी सुझावहरू पनि दिएका छन् । यिनमा कतिपय गम्भीर र चिन्तनपरक छन् । ग्रहण गर्नेहरूले कति ग्रहण गर्नुपर्ने ठान्दछन्, त्यो बेग्लै कुरो हो तर लेखकमा राष्ट्रविकास प्रति चिन्ता र चिन्तन दुवै छन् । यो पुस्तकको विशेषता हो ।

17. दाहाल, कृष्णप्रसाद (सं.)

लेखजंग खत्रीका कथाहरू - काठमाण्डौं: उन्नयन, २०६६.

९५पृ

N 891.4953 खत्रीले-ले 62103

कथाकार लेखजंग खत्री 'लेखजंग खत्रीका कथाहरू' लिएर आधुनिक नेपाली कथाको संसारमा विधिवत् र आधिकारिक रूपमा प्रस्तुत भएका छन् । आभ्यासिक अवस्थाबाटै प्रौढताको लक्षण लिएर देखा परेका खत्री आशा लाग्दा प्रतिभा हुन । मूलतः आफू बाँचेको समयलाई नियालेर त्यसलाई कथामा लिपिबद्ध गर्न सक्नु उनको विशेषता हो । यो कथासंग्रह प्रेमको दिव्य, शाश्वत विषय र समसामयिक विकृति, विसंगतिपूर्ण राजनीतिले अस्तव्यस्त पारेको मानवीय मन र मस्तिष्कमा शान्ति, अहिंसाको स्नेहसिक्त हार्दिक मलमपट्टि लिएर प्रस्तुत भएको छ । यस संग्रहभित्रका कथाहरूले प्रेमलाई सस्तो आँखाले हेर्नेहरूलाई र राजनीतिलाई आफ्नो मात्रै स्वार्थपूर्तिको क्रीडास्थल गराउन पल्किएकाहरूलाई सरल, सहज र संवेद्य किसिमले चोटिलो व्यंग्यात्मक शब्द पस्कन सफल भएका छन् । यिनै कुराहरू नै यस कथासंग्रहका मूलभूत प्राप्ति हुन् ।

18. वर्मा, एल.एस.

महाभारत की कथाएँ - नई दिल्ली: लक्ष्य, २००८.

१६०पृ

H 891.43358 वर्माए-म 61810

महाभारत महर्षि व्यास द्वारा रचित एक ऐसा महान् ग्रन्थ है, जिसके प्रत्येक अंश से इस महान भारतवर्ष की प्राचीन गौरवमयी, स्वर्णिम, सनातन, सभ्यता व संस्कृति की झलक मिलती है । यह महाभारत के श्रेष्ठ गुणों का प्रमाण ही है कि हमारे पुराणों में भी इसे महत्वपूर्ण स्थान दिया है । सामान्य शब्दों में कई बार महाभारत को मात्र कुरूक्षेत्र में लडा गया भयंकर युद्ध हि मान लिया जाता है । यही कारण है कि कहीं झगडा होने पर लोग कह भी देते हैं 'क्या महाभारत मचा रखी है।' लेकिन यह सही नही है । महाभारत मात्र एक युद्ध नहीं है । वरन् त्याग, दान, निष्ठा, कर्तव्य, वीरता, बलिदान और उन श्रेष्ठ मानवीय गुणों का ऐसा भण्डार है जिन्हें पाने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं और इसी उद्देश्य से यदा-कदा इस पृथ्वी पर जन्म लेकर अवतरित भी होते है ।

19. **Schelling, Thomas C.**

The Strategy of Conflict — New Delhi: Viva, 2008.

309p

327.16 SCH-S 62023

In eminently lucid and often charming language, Professor Schelling's work opens to rational analysis a crucial field of politics, the international politics of threat, or as the current term goes, of deterrence. In this field, the author's analysis goes beyond what has been done by earlier writers. It is the best, most incisive, and most stimulating book on the subject. An important contribution to understanding the conduct of the ambiguous conflict between the communist bloc on the one hand and the United States and its Free World Allies on the other.

20. **Dhungel, D.N. (Ed.)**

The Nepal-India Water Resources Relationship: Challenges - Kathmandu: IIDS, 2009.

309p

NR 333.910095496054 DHU-N 62143

Unless they are torn apart by tectonic action, Nepal and India have to live and engage with each other in many spheres: social, economic and political. Of all the engagements the two countries have to deal with, the issue of water resources is the most important and at the same times a very sensitive issue, because water is the most important natural resource that Nepal possesses, although most of it has yet to be xploited. The size and topography of Nepal are such that the three countries of the Indian sub-continent, Nepal, India and Bangladesh, could benefit immernsely, if Nepal's 6000 rivers are harnessed optimally. There are both people-to-people and official aspects to the water resources relationship between Nepal and India, the former existing from time immemorial and the latter since at least the time of British India, as set down in a number of treaties. The 11 chapters that make up this monograph provide a masterly guide to the entire spectrum of water resources relationship between Nepal and India: historical perspective, economic and development issues, flooding, hydropower and energy trading, seaport access via canals and waterways and personal reflections of the power interplay between the countries and an epilogue.

21. **Pathak, Bindeshwar**

Road to Freedom: A sociological study on the abolition of scavenging in India - New Delhi: Xtreme Office Aids, 2006.

254p

301.07054 PAT-R 62074

This book is the result of twenty years of study, research and fieldwork by the author who is a Gandhian with long years in social service. It is a seminal piece of work on scavenging which extensively discusses its sources, history and geography spread. The social inequity of the system has always concerned Dr. Bindeshwar Pathak who joined Gandhiji's movement for the liberation of scavengers soon after his education. He suggests solutions based on his experience of having redeemed and resettled more than 25,000 scavengers. The source material of the book is the author's work experience as well as a deep study of all available documents on scavenging. Road to freedom is a holistic approach to the problem of scavenging, aimed at a total liquidation of the system. The author seeks to give scavengers new life and hope by providing a technology which has been accepted even by UN bodies- an effective low-cost and appropriate alternative to scavenging.

22. **Shaida, Khalid Hameed**

Hafiz: Drunk with God- Selected odes - Texas: Khalid Hameed Shaida, 2010.

336p

891.551043 HAF-H 62138

Born as Shamsuddin Mohamed in 1320 AD in Shiraz, Persia, Hafiz memorized the Quran at an early age to become known as Hafiz, which he later adopted as his pen name. A self-taught scholar, mystic, and poet, he became a favorite of kings, prices, as well as ministers and spent his adult life in relative affluence. Without a doubt, he remains one of the most revered poets of all time and while much of his poetry has been lost over the centuries, six hundred poems, mainly odes, survive. Herein two hundred ninety-nine are offered as tiny celebrations of what the world, in all her glory, provides.

23. **Shaida, Khalid Hameed**

Ghalib: The Indian beloved- Urdu odes - Texax: Khalid Hameed Shaida, 2010.

159p

891.551043 GHA-G 62139

Preserving the pulse of Eastern poetry, translator and interpreter Khalid Hameed Shaida offers readers romance, romance, and more romance in this his fourth English translation. Changing gears to tackle a relatively modern Indian poet, Shaida helps Ghalib again show the world what it is to love fully, completely, and, arguably, eternally. Ghalib's love is primarily romantic-and his beauty feminine. He is one of the most celebrated romantic poets of India who wrote in Urdu and, now, a fresh translation helps describe how relevant, insistent, and enganging his voice remains-and how lovely it is to love.

24. **Huntington, Samuel P.**

Political Order in Changing Societies - New Delhi: Adarsh, 2009.
488p
320.011 HUN -P 62042

This now-classic examination of the development of viable political institutions in emerging nations is a major and enduring contribution to modern political analysis. In a new Foreword, Francis Fukuyama assesses Huntington's achievement, examining the context of the book's original publication as well as its lasting importance. This book which first appear in 1968, was one of the classics of late twentieth-century social science, a work that had enormous influence on the way people thought about development, both the academia and in the policy world. The breadth of knowledge about developing countries, as well as the analystical insight that Political Order brought to bear, was astonishing, and cemented Samuel Huntington's reputation as one of the foremost political scientists of his generations.

25. **Shaida, Khalid Hameed**

Khusro: The Indian Orpheus- A hundred odes - Texas: Khalid Hameed Shaida, 2010.
99p
891.551043 KHU-K 62140

Affluent and jovial, Khusro, the 13th century poet and musician who would become known throughout the Middle East-and now the world-is a Persian mystic who loved melody, words and love. During his lifetime he became a favorite of the kings and princes, his interpretation of love's musings are frivolous, fanciful and lovely proving that love and poetry walk hand in hand-always have and always will. With a classic vision of the Persian mystic and poetic experience, the translator Shaida provides readers with yet another translation of a lesser known Persian favorite. This time he offers Khusro, the Indian Orpheus, A Hundred Odes and uses American English in this playful and at times raucous collection of one hundred love poems numbered sequentially.

26. **Bloom, Harold (Ed.)**

Raskolnikov and Svidrigailov - Philadelphia: Chesea House, 2004.
232p
891.733 BLO-R 62097

Published in 1866, Crime and Punishment is an engrossing psychological portrait, a detective thriller, and a profound relfection on guilt and retribution, Fyodor Dostoevsky centers the novel and Rodion Raskolnikov, a malcontented, impoverished former student. Believing himself to be both extraordinary and above societal trappings, he commits a double-murder. The crime induces guilt and confusion in Raskolnikov, and the narrative follows the complex labyrinth of his emotions and his tormented struggle with his conscience, with the nihilistic Arkady Svidrigailov acting as pitiless foil. Dostoevsky masterfully depicts Raskolnikov's psychological battle and tragic downfall, while also layering the novel with philosophical, religious, and social commentary.

27. **Bloom, Harold (Ed.)**

The Tales of Poe - Philadelphia: Chesea House, 1987.
167p
813.3 BLO-R 62101

Poe's survival raises perpetually the issue as to whether literary merit and canonical status necessarily go together. It can be thought of no other American writer, down to this moment, at once so inevitable and so dubious… A considerable part of Peo's mythological power emanates from his own difficult sense that the ego is always a bodily ego. The characters of Poe's tales live out nearly every conceivable fantasy of introjection and identification, seeking to assuage their melancholia by psychically devouring the lost objects of their affections.

Author Index

S.No.	Author	Page No.
1.	सोनी, वेद प्रकाश	1
2.	सोनी, वेद प्रकाश	1
3.	सिंह, जसदेव	1
4.	सिन्हा, तारा (सं.)	2
5.	आयंगार, बी.के.एस.	2
6.	सान्याल, शचीन्द्रनाथ	3
7.	दर्शक, हंसराज	3
8.	पांचाल, परमानन्द	4
9.	पुरोहित, किशनलाल	4
10.	प्रसाद, राजेंद्र	5
11.	प्रसाद, जयशंकर	5
12.	प्रसाद, जयशंकर	6
13.	चट्टोपाध्याय, शरत्चन्द्र	6

14.	प्रेमचंद	7
15.	धमला, जीवनाथ	7
16.	शमशेर, हिमालय	8
17.	दाहाल, कृष्णप्रसाद (सं.)	8
18.	वर्मा, एल.एस.	8
19.	Bloom, Harold (Ed.)	12
20.	Bloom, Harold (Ed.)	11
21.	Dhungel, D.N. (Ed.)	9
22.	Huntington, Samuel P.	11
23.	Pathak, Bindeshwar	10
24.	Schelling, Thomas C.	9
25.	Shaida, Khalid Hameed	10
26.	Shaida, Khalid Hameed	10
27.	Shaida, Khalid Hameed	11

Title Index

S.No.	Title	Page No.
1.	मथुरा	1
2.	काशी–वाराणसी	1
3.	मैं जसदेव सिंह बोल रहा हूँ	1
4.	राजेंद्र बाबूः पत्रों के आईने में	2
5.	सभी के लिए योग	2
6.	बन्दी जीवन	3
7.	भारत देशाटन	3
8.	अमीर खुसरोः व्यक्तित्व और कृतित्व	4
9.	भारत की महान विभूतियाँ	4
10.	आत्मकथा	5
11.	कामायनी	5
12.	कंकाल	6
13.	कमला	6
14.	मानसरोवर	7

15.	सम्झना र चिन्तन	8
16.	लेखजंग खत्रीका कथाहरू	8
17.	महाभारत की कथाएँ	8
18.	लोकतान्त्रिक आन्दोलनका शीर्ष-सेनानी : गिरिजाप्रसाद कोइराला संकल्प र नेतृत्व	7
19.	Ghalib: The Indian beloved- Urdu odes	10
20.	Hafiz: Drunk with God- Selected odes	10
21.	Khusro: The Indian Orpheus- A hundred odes	11
22.	Political Order in Changing Societies	11
23.	Raskolnikov and Svidrigailov	11
24.	Road to Freedom: A sociological study on the abolition of scavenging in India	10
25.	The Nepal-India Water Resources Relationship: Challenges	9
26.	The Strategy of Conflict	9
27.	The Tales of Poe	12

May – June 2010

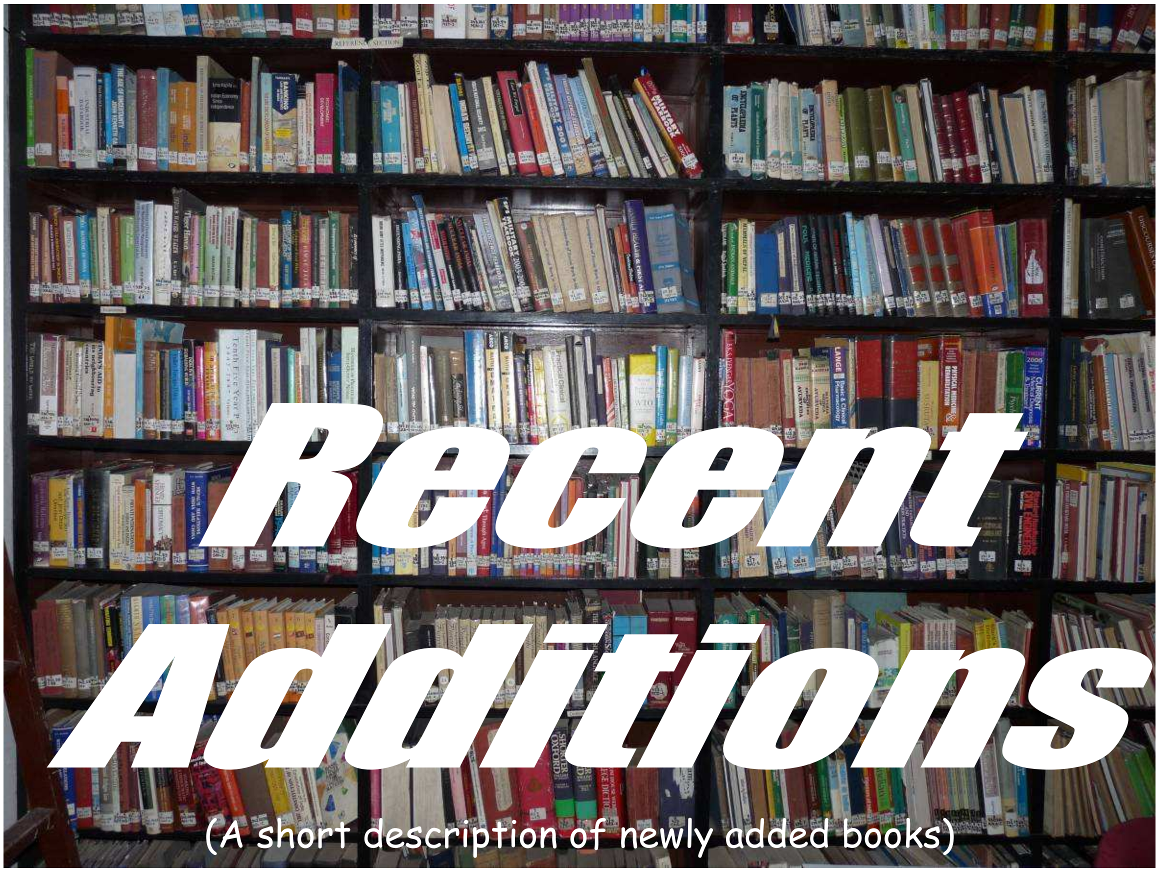

Nepal Bharat Library, Embassy of India,
Nepal Airlines Corporation Building,
New Road, Kathmandu, Nepal.
Phone : 4243497, Fax : 4255414
E-mail : librarian@eoiktm.org

QUOTATION

I can read anything which I call *a book*. There are things in that shape which I cannot allow for such. In this catalogue of *books which are no books - biblia a-biblia* - I reckon Court Calendars, Directories, Pocket Books, Draught Boards bound and lettered at the back, Scientific Treatises, Almanacks; Statues at Large; the works of Hume, Gibbon, Robertson, Beattie, Soame Jenyns, and generally, all those volumes which 'no gentleman's library should be without': the Histories of Flavius Josephus (that learned Jew), and Paley's Moral Philosophy.

Source: Last Essays of Elia. Detached Thoughts on Books and Reading.

KEY INDEX

1. Key Words 1-12

2. Author Index 13-14

3. Title Index 15-16